ॐ [illegible]

इस किताब का मोल हरि चन्द्र लाल [illegible]
इसकी

[illegible]

हरि चंद्र
शर्मा

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

विद्यावति
मटहं गली
नामा

श्री गणेशायनमः

शिवमहिम्न स्तोत्रप्रारम्भः



पुष्पदन्त उवाच श्लोकः

महिम्नः पारंते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपितदवसन्नास्त्वयिगिरः
अथावाच्यःसर्वःस्वमतिपरिणामावधिगृण
न्नमाप्यषेस्तोत्रेहरनिरपवादःपरिकरः १

हे हर ! याने जगत की पीड़ा को हरनेवाले महादेवजी आपकी महिमा के पारको किंचित् भी न जानते ऐसे अज्ञानियों करके गाई हुई स्तुति यदि आपके असमान [अयोग्य] होवे तो ब्रह्मादिकोंकी भी वाणी याने गाई हुई स्तुति जो हैं वे सब निष्फल होजावेंगी तिससे हमारा अधिकार न होगा तो उन

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

का [ब्रह्मादिकों का] भी अधिकार न होगा तो हम दोनों समान हुए, तथापि यह सर्व जन अपनी बुद्धि का परिणाम याने परिपाकसोंही अवधि अर्थात् सीमा वहीं तक कहना अवश्यहै इससे आप करके अवाच्य अनुग्रह करने योग्यही है, यदि ऐसा है तो मेरा भी इस स्तोत्र के विषे जो आरम्भ है वो निरपवाद होवे यह चाहता हूं ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानंतवमहिमावाङ्मनसयो
स्तद्व्यावृत्त्यांयचकितमभिधत्तेश्रुतिरपि॥
सकस्यस्तोतव्यःकतिविधगुणःकस्यविषय-
यपदेत्ववर्वाचीनेपततिनमनःकस्यनवचः २

हे प्रभो आपकी महिमा वाणी और मनसे परे है जिससे वेद भी चकित हुये कहातेहैं सो अतद्व्यावृत्ति करके याने सो नहीं २ ऐसे अनुमान से आपकी महिमा को वेद जानते हैं सो एतादृश महिमा वाले

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

आप किससे स्तुति किये जाओ कान जाने आप में कितने गुणहैं औरआप किस करके ग्राह्यहो परन्तुयह आपके स्थिति, प्रलय करके विषय में, किसका मन अथवा वाणी न पड़े याने आपके गुण सबही अपनी बुद्धि के अनुसार कहा चाहते हैं तो मैं भी कुछ प्राथना करता हूं ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतंनिर्मितवत
स्तवब्रह्मन्‌किंवा गपिसुरगुरोर्विस्मयपदम्
ममत्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्‌पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ३

हे भगवान ! परम अमृत रूप मधु सदृश निष्टयाने कोमल देवरूप वाणी रचते भय, आपको ब्रह्माजीकी भी वाणी क्या विस्मय पद है, यदि ब्रह्मादिकों की वाणी तुच्छ है तो पुनः मैं क्या स्तुति करता हूं तो ऐसा नहीं, हे त्रिपुर मथन ! मैं तो केवल आपके

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

पवित्र करने वाले गुणों के कथनसे अपनी बुद्धि को पवित्र करताहूं मेरी मतितो ऐसी निश्चितहुई है॥ ३॥

तवैश्वर्य्यंयत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत
त्रयीवस्तु व्यस्तंतिसृषुगुणभिन्नासुतनुषु॥
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहंतुंव्याक्रोशींविदधतइहैकेजडधियः ४

हे वरको देने वाले! जो जगत की उत्पत्ति, रक्षा प्रलय करने वाला ऐश्वर्य है सो गुणों से भिन्नयाने ब्रह्मा, विष्णु महेश इन तीन देवों में माना गया है वस्तुतः आप एकही हो, आपका ऐश्वर्य कैसा है जो वेदत्रयी में सारभूत है हे भगवान! कई एक जड़ बुद्धि वाले [मीमांसक] आपके ऐश्वर्यको न सहन करते हुये आपकी निंदा करते हैं जो अभव्य पापियों करके रमणीय आपके इस ऐश्वर्या में रमण नकरसके ऐसा अरमणीय निन्दा करते हैं॥ ४॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

किमीहः किंकायः सखलु किमुपायस्त्रिभुवन
किमाधारोधातासृजति किमुपादानइतिच
अतर्क्यैश्वर्येत्त्वय्यनवसरदुःस्थोहताधियः
कुतर्कोयंकांश्चिन्मुखरयतिमोहायजगतः

निश्चय करके विधाता जगत को सृजता है परन्तु किस चेष्टा में सृजता हैं तैसेही क्या आधार उसको है ? और क्या उपादान है हे भगवान ! एतादृशजो सन्देह करते हैं, सो यह कुतर्क कोई मन्दमति वालों को ही ठगताहै याने तिनकेही मतमें समाताहै, किस लिये कि जगत के मोहके लिये वह कुतर्क जैसाकि जोतर्कन किया जावै ऐसे ऐश्वर्य वाले आप अवसर को नहीं प्राप्त होसके ऐसे अतुल प्रतापी आपहैं॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयवंतोपि जगत
मधिष्ठातारं किं भवविधिरना दृत्यभवति

अनीशो वा कुर्याद्भुवन जननेकः परिकरो
यते मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरतइमे६

ये अवयव वाले लोक (शरीर) क्या अजन्मा है जगत की रचना क्या रचना करने वाले का निरादर करके होती है। और वो बिधाता यदि न समर्थ होगा तौ क्या होगा ? और जगके रचने में उसके पास कौनसा साधन है। ऐसे मंद मति वाले आपके विषे जो सन्देह करते हैं सो व्यर्थ है हे अमरवर (देवश्रेष्ट) मुझे तो आपके विषे कुछ सन्देहनहींहै६॥

त्रयीसांख्यंयोगःपशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्नेप्रस्थाने परिमिदमदःपथ्यमितिच॥
रुचीनांवैचित्र्यादृजुकुटिलनाना पथजुषा
नृणामेकोगम्यस्त्वमसिपयसामर्णवइव७

हे भगवान ! वेदत्रयी, सांख्य, योग, शैवमत वैष्णव

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

मत, ऐसे भिन्न भिन्न मत होने से उन मतों के विषे कोई कहते हैं वैष्णव मत अच्छा है कोई कहते हैं शैवमत ऐसे रुचिकी विचित्रता से सीधे टेढ़े मार्ग में प्रवृत हुए मनुष्यों को अन्त में, एक आपही प्राप्त होते हो जैसे नदियां टेढ़ी सीधी बहती हुई समुद्र में मिलती हैं ॥ ७ ॥

महोक्षःखट्वांग परशुरजिनंभस्मफणिनः
कपालं चेतीयत्तव बरद तंत्रोप करणम् ॥
सुरास्तांता मृद्धिं दधातितु भवद्प्रणिहितां
नहिस्वात्मारामंविषयमृगतृष्णाभ्रामयति

हे भगवान ! महोक्ष याने बूढ़ा वृषभ, खटिया को पावा परशु. गजचर्म, भस्म, सर्प कपाल इत्यादि तो आपकी सामग्री है, परन्तु हे वरद ! देवता लोग तां तां याने उन अपनी २ समृद्धि आपके कृपादृष्टि से बताई हुई को धारण करते हैं तो आप क्यों नहीं

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

भोगते होतो कहते हैं कि स्वात्माराम याने योगिजनों को विषय रूप मृग तृष्णा नहीं भ्रमती है ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्तद्ध्रुवमिदं
परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन्जिह्रेमित्वा न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९

हे भगवान ! कोई यह सम्पूरण जगत् को ध्रुव कहते हैं कोई अध्रुव कहते हैं, कोई जगत के विषय में ध्रुव अध्रुव याने नित्य अनित्य कहते हैं ऐसे यह विपरीत विषय वाले इस जगत में तिन अनेक मति वादियों करके विस्मत हुआ मैं आपकी स्तुति करने में लजाता हूं यह बाचालता ढिटाई नहीं है किन्तु वो मुझको प्रेरणा करती है ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिंचो हरि रधः

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

परिच्छेत्तुं यातावनमनलस्कंधवपुषः ॥
ततोभक्तिश्रद्धाभरगुरुगुणद्भ्यां गिरिशयत्
स्वयंस्तथेताभ्यातवाकिमनुवर्त्तिर्नफलति॥

हे भगवान्! ऊपर को विरंचि, और नीचे को विष्णु ऐसे ये दोनों आपके ऐश्वर्य को ठहराने लगे सो असमर्थ हुए, आप कैसे हैं अनल याने तेजरूप शरीर पुनः हे देव! भक्ति श्रद्धा करके स्तवन करनेसे तिन दोनोंके लिये आप प्रत्यक्ष दर्शन देते भये सो आपकी सेवा क्यानहीं फलती? अर्थात् फलती है।। १०

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं।
दशास्यो यद्बाहूनभृतरणकंडूपरवशान् ॥
शिरः पद्म श्रेणीरचितचरणांभोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहराविस्फूर्जितमिदं

हे त्रिपुरहर! जो रावण वैरियों के सिवाय त्रिभुवन

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

के राज्यको प्राप्त होकर बाहुओं को धारण करता भया वे कैसे बाहु रणकडू के परवश याने युद्धको चाहते, सो यह आपकी स्थिर भक्ति का ही बिलास मात्र है, वो भक्ति कैसी कि अपने मस्तक की पंक्ती आपके चरणमें समर्पण करो ॥ ११ ॥

ममुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारंभुजबलं।
वलात्कैलासेपित्वदधि वसतौविक्रमयतः॥
अलभ्या पातालेप्यलसचलितांगुष्टशिरसि
प्रतिष्ठात्वय्यासीध्रुवमुचितोमुह्यतिखलः १२

हे भगवान् ! आपके कैलाश में रहते हुये भीअपने भुजबल को अंदाज रहा ऐसे रावण को पाताल में प्रतिष्ठा न हुई वह भुजबल कैसे हैं कि आप के सेवाहीसे प्राप्त हुआ है पराक्रम जिनमें औरसहजही चलाये हुए पैरके अंगुष्ठ से दबगया सारांश यह है कि जब रावण कैलास पर्वत उठाने लगा तब आपने

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

पैरका अँगूठा हिलाया त्योंही उसकी भुजायें दबगईं उस समय पाताल के लोग हँसने लगे इस प्रकार रावणकी श्री बिगड़गई दुर्जन जो हैं सो ऐश्वर्यवान होने से मोहको प्राप्त होते हैं ॥ १२ ॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीं।
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः॥
नतच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरित्वचरणयो
र्नकस्याप्युन्नत्यैभवतिशिरस्त्वय्यवनतिः

हे प्रभो! जो बाणासुर सुत्रामा याने इन्द्र तिसकी वृद्धिगति हुई समृद्धि याने (ऐश्वर्य) तिसकादवाता भया याने तुच्छ किया कैसा वह कि स्वाधीन है त्रिभुवन तिसके, सो तिसमें आश्चर्य नहीं क्योंकिवह तो आपके चरणमें रहताथा तो आपको नमस्कारन किये हुए किसी की उन्नति नहीं होतीहै ॥ १३॥

अकांडब्राड क्षयचाकितदेवा सुरकृपा ।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

विधेयस्याऽसाद्यास्त्रिनयनाविषं सहृतवतः
स कल्माषः कण्ठे तवनकुरुते न श्रियमहो
विकारोमिश्लाध्योभवनभुयंभगव्यसमिनः

हे त्रिनयन ! समस्त ब्रह्माण्डका क्षय होनेके डरसे चकित हुऐ देव, तथा राक्षस तिनपर कृपा करने वाले आप कालकूट विषको पीगए धारण किये हुये विषका आपके कण्ठमें जो नीलत्वहै सो क्या नहीं शोभताहै किन्तु वह भी शोभता है क्योंकि त्रिभुवन के भंग होने के भयसे दुःखित ऐसे आपके कंठ में कालापन वर्णन करने योग्य है, तिस करके आप नीलकंठ कहाते हैं ।। १४ ।।

असिद्धार्थानैव क्वचिदपि सदेवा सुरनरे
निवर्ततेनित्यंजगतिजयिनोयस्याबिशिखाः
सपश्य-नीशत्वामितर सुरसाधारणमभूत

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

स्मरःस्मर्तव्यात्मानहिवशिषुपथ्यःपरिभव

हे ईश ! सम्पूर्ण जगतको जीतने वाले जिसकाम देवके विशिख अर्थात् वाण, देव असुर मनुष्य आदि सब संसार में कहीं भी अपने अर्थ को सिद्ध किये बिना नहीं मुडे ऐसा वह मदन आपको इतर देवताओं के समान देखता हुआ स्मर्तव्य हुआ दग्ध हो गया ॥ १५ ॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदंविष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ॥
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यंयात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायैत्वं नटसिननुवामैव विभुता १६

हे भगवान् ! आप जगत् रक्षा के अर्थ नाचते हो सो आपकी उलटी विभूती है, क्योंकि पृथ्वी जो है सो आपके पादाघात से याने पैर चलाने से

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

एंशय पदको प्राप्त होती है याने मैं धस न जाऊं और आपकी भ्रमण करती हुई अर्गला सरीखी भुजाओंसे डगमगाते तारागणों वाला आकाशदुखी होताहै और चंचल जटाओं करके तड़ित हुआस्वर्ग बारम्बार थक जाता है ॥ १६ ॥

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारांयः पृषितलघुदृष्टाःशिरसिते ॥
जगद्द्वीपाकारंजलधिवलयं तेन कृतमि
त्यानेनैवोन्नेयं धृतमहिमादिव्यंतववपु।१७।

हे भगवन् ! जो जलका प्रवाह आकाशमा प्राप्त और तारागणों मे गुणित याने गिनाहुआ फेनउठने की कांति जिसकी सो आपके मस्तक बिन्दु समान छोटासा दीख पड़ा और उस करके यह जगत द्वीपाकार समुद्र से घिरा हुआ किया गया इसकरके

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ही दीप्त महिमा धारी आपका शरीर उत्तम जान लेना चाहिये ॥ १७ ॥

रथःक्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथागे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिःशरइति ॥
दिधक्षोस्त कोयं त्रिपुरतृणमाडबर विधि
र्विधेयःक्रीडत्योनखलुपरंतत्राःप्रभुधियः १८

हे महादेव ! तृणके समान त्रिपुरासुरको भस्मकरने की इच्छा करते हुए आपका क्या ? यह आडम्बर याने बखेड़ा करना देखो पृथ्वी तो रथ ब्रह्मा सारथी अगेंद्र याने पर्वतों का राजा धनुष रथ चन्द्ररथके चक्र और चक्रपाणि (चक्र है हाथमें जिसके ऐसा) विष्णु सोही वाण बनाया यह तो ठीक है क्यों कि भक्तों के साथ क्रीड़ा करती हुई प्रभुओं की बुद्धियां निश्चय करके पर तन्त्र याने पराधीन नहीं होती है ॥१८

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

हरिस्त साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो
र्यदेकोनेकस्मिन्निजम दहरन्नेत्रकमलम् ॥
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणांरक्षायैत्रिपुरहरजागर्तिजगताम् १६

हे त्रिपुरहर ! हरि याने विष्णु आपके चरण में सहस्र कमलों को बलि याने भेट रखकर पूजन करते थे सो तिन में जब एकऊन याने एक कम हुआ तब अपने नेत्र कमल को निकालते भये तब भक्ति का उद्रेक याने बुद्धी के परिणाम को प्राप्त होताहुआ (यह भक्ती सीमा हुई) सो सुदर्शन चक्र होकर स्वर्ग मृत्यु, पाताल ऐसे त्रिभुवन की रक्षा के अर्थ जागृत है सो केवल यह आपका अनुग्रह है ॥ १६ ॥

क्रतौ सुप्तेजाग्रत्त्वमसि फलयोगेक्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते
अतस्त्वा सम्प्रेक्ष्यक्रतुषुफलदानप्रति भूवं

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्रुतौ श्रद्धांबध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः २

हे भगवान् ! क्रतु अर्थात् यज्ञ सो किसी उपद्रव नष्ट भये सन्ते क्रतुमता याने यज्ञ करने वालोंके फ- देने में आपही जागृत रहतेहो नहीं ता प्रध्वस्त(नष्ट) हुआ कर्म पुरुष के आराधन बिना फली भूत होगा. इस से आपको यज्ञ फल देने के प्रति भू अर्थात सध्यस्त समझ कर यह जन समूह कर्म करनेमें दृढ परिकर याने मजबूत कमर बांध रहा है, क्योंकि मुख्य फलदाता आपही हो ॥ २० ॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता मृषीणामार्त्विज्यं शरणदसदस्याःसुरगणाः॥ क्रतुभ्रंषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवंकर्तुःश्रद्धाविधुरमभिचारायहिमखाः२१

हे शरणद ! जो दक्ष क्रिया कुशल और शरीरियों में यज्ञपात था, कि जिस दक्ष प्रजापति के यज्ञ में

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

ऋषियों का आर्त्विज्य था, सुरगण सदस्य (सभ्य) थे ऐसे दक्ष के यज्ञ के फलको दैना यही है व्यसन (चिन्ता) जिनको ऐमे आपसे यज्ञका नाश हुआ इससे यह प्रगट हुआ कि श्रद्धा बिना करने वालेके यज्ञ बिपरीत फल दैने वाली होती है ॥ २१ ॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभममभिकं स्वदुहितरं
गतं रोहिद्भूतांरिरमयिषुमृष्यस्यवपुषा॥
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्रा कृतममुं
त्रसतंतेद्यापित्यजतिनमृगव्याधरभसः२२

हे नाथ ! आपका आखेट खेलना कैसाहै कि डरे हुये प्रजानाथ याने ब्रह्माजी को स्वर्ग गये हुए की अद्यापि भी नहीं छोड़ता, वे कैसे ब्रह्माजी हैं कि बलात्कार से रममाण होने की इच्छा करते हुएतिस से डरी हुई हरिणी भई अपनी कन्यासे हरिणहोकर भी पुनः विषय करना चाहते भये और आप धनुष

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

हाथ में लिये हुए आपसे डरता और कमके स्वाधीन हो रहा है ॥ २२ ॥

पुष्पायुधमपि

य
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नायतृणवत
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ॥
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्ध घटना
दवैति त्वामद्धा बतवरद मुग्धायुवतयः २३

हे पुरमथन ! आपने पुष्पायुध याने मदन को तृण के समान शीघ्र जलाकर और किया यहप्रत्यक्ष देखने भी पुनः देवी पार्वती, आपको स्त्रैण याने अपनेवश जानती हैं यह अत्यन्त खेदकी बातहै वह देवीकैमी है कि अपनी सुन्दरता की प्रशंसा करती हैवहमदन कैसा है कि धनुषको धारण करने वाला किस हेतु से ? सो निरन्तर देहार्ध घटना याने आधे शरीर में अपने को राखने से हे बरद ! युवति जन(स्त्रियां) प्रायः मूर्खही रहती हैं ॥ २३ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः॥
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं।
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि २४

हे स्मरहर ! आपका श्मशान में रहना, भूत प्रेत पिशाच ये आपके साथ रहने वाले, और शरीर में चिता के भस्म का लेपन नरमुण्डों की माला इस प्रकार आपका स्वभाव अमंगल है, तथापि स्मरण करनेवालों के हे वरद ! आप परम मंगल रूप हैं ॥ २४ ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः॥
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यंतस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्

हे भगवन् ! प्राणायामादि करने वाले विषयों से

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

निवृत्त एवं जो यमि अर्थात् योगिजन अपने अन्तः करण में अपने मनको धारने वाले याने स्थिर करने वाले जो कुछ तत्व को देखकर जिनके रोमांच खडे हो रहे हैं और आनन्द करके नेत्र में जल भरआया है मानों वे अमृत के हृद में गोता लगाय जो आनन्द को प्राप्त होते हैं सो निश्चय करके वहतत्व आपही हो ॥ २५ ॥

त्वमर्कस्त्वंसोमस्त्वमसिपवनस्त्वंहुतवहः
त्वमापस्त्वंव्योमत्वमुधरणिरात्मंत्वमितिच
परिच्छिन्नामेवंत्वयि परिणताबिभ्रतिगिरा।
नविद्मस्तत्तत्वंवयमिहतुयत्त्वंनभवसि॥२६

हे भगवन्! आप सूर्य हो, आप चन्द्रमा, हो आप वायु हो, आप अग्नि हो, आप जलहो, आप स्वर्ग हो, आप पृथ्वी हो और आत्मा भी आपहोहो हे देवाधिदेव? इस प्रकार आपमें जो ज्ञानी और भक्तजन परिच्छिन्न अर्थात् पृथक् २ वाणी कहते हैं

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सो भले ही कहो परन्तु हम नहीं जानते कि ऐसा कौन तत्व है जोकि आप नहीं हो ॥ २६ ॥

त्रयींतिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवननाथोत्रीनापिसुरा,
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ॥
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिर वरुधानमणुभिः
समस्तंव्यस्तंत्वांशरणदगृणात्योमितिपदं

हे शरण देने वाले ! ॐ यह ब्रह्मपद सम्पूर्ण व्यस्त याने अ, उ, म, सो आपही की स्तुति करता है क्या करता हुआ कि—अकारादि तीनों वर्णों करके त्रयीं याने वेदत्रयी (ऋग, युग, साम) और तीनों व्रती अर्थात् (उदात्त, अनुदात्त स्वारत) अथवा जाग्रदादि अवस्था इनका, और स्वर्ग, मृत्यु, पाताल और तीनों देवताओं को धारण करता हुआ जो ओंकार कैसा कि तीर्ण विकृति अर्थात् निर्विकार और सूक्ष्म ध्वनियों से आपका जो तुराय धाम याने जाग्रदादि अवस्थाओं से परे जो चतुर्थ धाम तिसे बता रहा है ॥ २७ ॥

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

भवः शर्वोरुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहा
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदं
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योस्मि भवते

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र पशुपति, उग्र महादेव भीम, ईशान, यह जो आपके नामका अष्टक है इस प्रत्येक नाम में श्रुतियां बिहार करती हैं इसलिये ऐसा जो प्रियधाम आप तिनके अर्थ मैं नमस्कार करता हूं ॥ २८ ॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठायाच नमः
नमः क्षोदिष्ठायस्मरहर महिष्ठायचनमः
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठायचनमो
नमः सर्वस्मैतेतदिदमिति सर्वायचनमः २६

हे शिव ! नेदिष्ठ अर्थात् अत्यन्त समीप एसे आप के अर्थ नमस्कार है. और दविष्ठ अर्थात अत्यन्त दूरवानव रहने वाले ऐसे आप के अर्थ नमस्कार है

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

चोदिष्ठ अर्थात परमसूक्ष्म आपके अर्थ नमस्कारहै हे स्मरहर ! याने कामदेव को जलाने वाले जो आप महिष्ठ याने बड़े, और बर्हिष्ठ याने अत्यन्त वृद्ध आप के अर्थ नमस्कार है, हे त्रिनयन ! यदिष्ठ अर्थात् अत्यन्त युवा (जवान) अवस्था वाले आपके अर्थ नमस्कार है, और हे सर्व स्वरूप ! आप के अर्थ नमस्कार है और समस्त को उल्लंघ के जाने वाले आपके अर्थ नमस्कार है ॥ २६ ॥

वहलरजसेविश्वोत्पत्तौ भवायनमो नमः।
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥
जनसुखकृतेसत्वोद्रिक्तौमृडायनमो नमः
प्रमहासिपदेनिस्त्रैगुणो शिवाय नमोनमः ०२

हे शिवजी ! जगतके उत्पत्तिके अर्थ परम रजगुण रूप धारण किये ऐसेजो आपभव तिनको बारम्बार नमस्कार हो और उसके (जगतके) संसार करनेमें गुणको धारण करने वाले जो आप हर तिन आप

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

मृडतिन को बारम्बार नमस्कारहो, प्रकपंस और तीनों गुणों से (सत् रज तम)परे जो अनिर्वचनीय पद तिसमेंजो शिवरूप आपको बारम्बारनमस्कारहो

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं ।
क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः
इति चकितममंदीकृत्य मांभक्ति राधा ।
द्वरद चरणयोस्तेवाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

हे भगवन् ! कृशहै परिमाण जिसको याने अत्यन्त मन्द और क्लेशके आधान ऐसामेरा चित्तकहा ! और गुणोंकी सीमाकोउल्लँघने वाली ऐसी आपकी ऋद्धि कहां ऐसे चकित हुए मुझको आपके चरण की शक्ति अमन्द करके हे वरद । वाक्य रूप पुष्प से पूजा करती भयी ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमंस्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं ।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

हे ईश ! असित याने काले पर्वतके समान काजल स्याही समुद्र रूप पात्र में होवै सुरतरु कल्पवृक्ष के साखाकी उत्तम लेखनी हो और पत्र पृथ्वी हो इत्यादि साधनों को लेकर यदि शारदा सर्व काल लिखती है तथापि आपके गुणों का पार नहीं पाती मैं तो कौन पदार्थ हूं ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्जितस्येंदुमौले ।
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो ।
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥२३॥

असुर सुर मुनीन्द्रों करके पूजित और विख्यात महिमा वाले ऐसे ईश्वर चन्द्रमौलिक इस स्तोत्र को अलघुवृत्त याने बड़े (शिखरिणी, करके सकल गुण श्रेष्ठ पुष्पदन्त नामक गंधर्व करता भया।३३।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतः ।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

पठातिपरमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः॥
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र।
प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥३४॥

शुद्ध चित्तहो इस अनवद्य महादेवजी के स्तोत्रको जो पुरुष प्रतिदिन परमभक्ति से पढ़ता है, सो इस लोकमें बहुतत्वको प्राप्त ।ताहै और पुत्रवान होकर कीर्तिमान होता है और मेरे पीछे रुद्रलोक में शिव के तुल्य अर्थात् शिव स्वरूप होता है ॥ ३४ ॥

दीक्षादानंतपस्तीर्थज्ञानंयोगादिकःक्रियाः
महिम्न तवपाठस्यकलां नार्हति षोडशीम्

हे शिव ! दीक्षा दान, तप, तीर्थ, यज्ञ योगादि क्रिया ये सब आपके इस महिम्न स्तोत्र पाठ की सोलवीं कला को भी प्राप्त नहीं होते हैं ॥३५॥

आसमाप्तमिदंस्तोत्रं पुण्यगंधर्वभाषितम्।
अनुपमंमनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥३६

अनौपम्यं गंधर्व

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

अनुपम और मनको हरने वाला और ईश्वर वर्णनात्मक और पवित्र पुष्पदन्त गंधर्व का कहा हुआ यह स्तोत्र समाप्त हुआ ॥ ३६ ॥

महेशान्नापरोदेवो महिम्नो नापरस्तुतिः।
अघोरान्नापरोमंत्रोनास्तितत्वगुरोःपरम् ३७

महादेवजी से परे कोई देव नहीं महिम्न से परे दूसरा कोई स्तोत्र नहीं अघोर से कोई मन्त्र नहीं और गुरु से परे कोई तत्व नहीं है ॥ २७ ॥

कुसुमदशननामा सर्व गंधर्वराजः दशन
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्यदासः ॥ खलु
सगुरु निजमहिम्नोभ्रष्टएवास्य रोषा।
त्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यंमहिम्नः ३८

पुष्पदन्त नामक सब गंधर्वों का राजाबाल चन्द्रमा को धारण करनेवाले ऐसे देवताओं के देव महादेवजी तिनका दास था, वह सुर गुरु (महादेवजी) के क्रोध से अपनी महिमा से भ्रष्ट हुआ, तब उनकी

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

प्रसन्नता के अर्थ यह परम दिव्य महिम्न स्तोत्र करता भया ॥ ३८ ॥

सुरवर मुनि पूज्यं स्वर्ग मोक्षैकहेतुं ।
पठति यदिमनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेतः ॥
व्रजाति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः ।
स्तवनामिदममोघंपुष्पदन्तप्रणीतम्॥ ३६॥

यह पुष्पदन्त का बनाया हुआ अमोघ स्तोत्र कैसाहै कि सुरवर मुनियों करके पूजित और स्वर्ग तथा मोक्ष का दैने का हेतू याने (मुख्य कारण) इसे जो मनुष्य अनन्य चित्त होकर हाथ जोड़कर पढे वो किन्नरों करके स्तुति किया हुआ शिवजीके समीप जाता है ॥ ३६ ॥

श्रीपुष्प दन्त मुख पंकज निर्गतेन ।
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हराप्रियेण ॥
कण्ठास्थितेन पठितेन समाहितेन ।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ ४० ॥

सावधान हो श्री पुष्पदन्त के मुखसे निकसे हुए पापहारी तथा महादेवजीके प्रिय स्तोत्र को कण्ठ पाठ करने से सम्पूर्ण प्राणि मात्र के स्वामी महादेव जी प्रसन्न होते हैं ॥ ४० ॥

इत्येषावाङ्मयी पूजाश्रीमच्छंकरपादयोः
अर्पिता तेनमेदेवेशःप्रीयतांमे सदाशिवः ॥ १
इति श्रीपुष्पदन्ताविं० श्रीशिवम०स० ॥

इस प्रकार यह वाङ्मयी पूजा श्री शंकर जी के चरण में अर्पण करो तिस करके मुझपर महादेवजी प्रसन्न होवें ॥ ४१ ॥

इति श्रीउन्नाव प्रदेशान्तर्गत बरौंढा ग्राम निवासी पं० आनन्द माधव दीक्षितात्मज पं०महाराजदीन दीक्षित कृत शिव महिम्न स्तोत्रं
भाषा टीका सम्पूर्णम् ।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

साढ़ेतीनयार आठों भाग।

यह किस्सा अति रोचक उपन्यास के ढंग पर लिखा गया है इस पुस्तक में रचयिता ने कपट का पूर्ण रूप से नक्शा खींचकर दिखा दिया है तथा सांसारिक शिक्षाओं का वर्णन छोटी२ कहानियों में (जो कि राजकुमारी ने अपने प्रेमी राजकुमार घनश्याम सिंह से कही है) भली भाँति किया है इसपुस्तक को एकबार हाथ में लेकर फिर छोड़ने को जी नहीं चाहता सच तो यह है कि इसको यदि नीति तथा चातुर्य्य का भण्डार कहें तो अत्युक्ति न होगी। मूल्य ।।।)

तोतामैंना आठों भाग।

यह कहानी ढंग की निराली ही है इसमें तोता ने बदकार स्त्रियों के दोष, कुचलन, चालाकियों व जाल आदिकी बातें कहानी के रूपमें कही हैं और इसी तरह मैंनाने पुरुषोंकी चालाकियों का वर्णन किया है अन्तमें तोताके साथ मैंना का विवाह हुआ है ।।।)

लाला श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

बूटी प्रचार।

यह वैद्यक का छोटासा ग्रन्थ अपने ढंगका निराला है इस पुस्तक का महात्मा महन्त सुखरामदासजी ने अपने जीवनभर अनुभव किये हुए चुटकलों से भराहै इसमें प्रत्येक छोटे और बड़े रोगोंके बहुतही सुगम उपाय लिखे हैं इस पुस्तक के पास रहने से मनुष्य अपने घरपर तथा विदेश में अपना और अपने साथियों का रोग दूर कर सकता है इसमें धातुओं के जारण मारण की विधि जंगलकी जड़ी बूटियोंद्वारा बहुत ही सहज लिखी हैं जिन२जड़ीबूटियों काकाम इस पुस्तक में पड़ा है उन सबके ऐसे सुन्दरचित्र दिये हैं मानों अक्स ही खींचकर रख दिया है यह चित्र प्रायः३०० से अधिक हैं पुस्तकके अन्तमेंनागेश्वर यन्त्र बालुका यन्त्र मृगांग यन्त्र आदिकेकितने ही अद्भुत और उपयोगी चित्र दिये हैं इसतरह सब मिल कर यह पुस्तक प्रायः ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है। मूल्य १)

पता-लाला श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा।

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri

हीराचन्द लहोरी

CC-0 Shri Krishna Museum, Kurukshetra. Digitized by eGangotri